CC-14- Revolution and Revolutionary thoughts

Unit-V (Gandhian Ideology) Part-3

For P.G.Sem-3

गांधी जी के अनुसार अहिंसा

- गांधी जी ने कहा कि मेरी अहिंसा अपने ढंग की है। मैं जानवरों को न मारने के सिद्धांत पूरी तरह से स्वीकार नहीं कर सकता। जो पशु मानव को खा जाते हैं या नुकसान पहुंचाते हैं उनकी जान बचाने की भावना मुझ में नहीं है। गांधी जी ने अहिंसा के मूल में प्रेम एवं करुणा को माना।
- गांधी जी के अहिंसा में आंतरिक शुद्धता का गुण पाया जाता है। अहिंसा में विश्वास करने वाला व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह आंतरिक शुद्धता में विश्वास करें।
- गांधी जी का मानना था कि अहिंसा के लिए निर्भीकता आवश्यक गुण है।

अहिंसा का स्वरूप

- व्यवहारिक अहिंसा -यह निर्बल एवं असहाय व्यक्तियों से संबंध रखती है व्यक्ति अपनी दुर्बलता के कारण हिंसा का प्रयोग नहीं कर पाते हैं। गांधी जी ने इसे निष्क्रिय प्रतिरोध कहा है।
- जागृत अहिंसा-यह अहिंसा का उत्कृष्ट रूप है जिस व्यक्ति विचारों की उत्कृष्ट एवं नैतिकता के कारण स्वीकार करता है यह वीरो एवं बहादुरों की अहिंसा है।

- <u>कायरों कि अहिंसा-</u>या अहिंसा का निम्न रूप है जो भय एवं डर पर आधारित है। कायर व्यक्ति ही अहिंसा का दंभ भरता है। गांधी जी कायरता के विरुद्ध थे एवं कायरता एवं हिंसा के बीच हिंसा को चुनना पसंद करते थे। वह इसे निष्क्रिय अहिंसा की संज्ञा दी।

<u>अहिंसा के लक्षण</u>

- **अहिंसा धनात्मक होता है**-संगठित अहिंसा से समाज परिष्कृत होता है। इनके अनुसार युद्ध को रोका जा सकता है और मानव संस्कृति को सभ्य बनाया जा सकता है।
- **अहिंसा कायरता नहीं** है-गांधी जी कहते हैं कि मेरा अहिंसा धर्म एक सक्रिय बल है। इसमें कायरता या दुर्बलता की गुंजाइश नहीं है। किसी हिंसक मनुष्य के किसी दिन अहिंसक बन जाने की गुंजाइश हो सकती है मगर कमजोर दिल वाले की ऐसी कोई आशा नहीं हो सकती है।
- **अहिंसा एवं प्रेम-**प्रेम अहिंसा की प्रेरक शक्ति का काम करता है प्रेम जीवन तथा घृणा विनाश को आमंत्रित करता है समूचे विश्व का संचालन प्रेम से हो सकता है।
- **अहिंसा एक विज्ञान के रूप में-** कोई भी व्यक्ति अहिंसा के वातावरण में अपनी अहिंसा को परख नहीं सकता। अहिंसा की परख केवल हिंसा के वातावरण में की जा सकती है।
- **अहिंसा व्यक्ति को दृढ़ एवं शक्तिशाली बनती है-**अहिंसा संसार के उन महान सिद्धांतों में से एक है जिसे दुनिया की कोई ताकत मिटा नहीं सकती। उनके अनुसार अहिंसा के सच्चाई प्रमाणित करने में मेरे जैसे हजारों लोग मर जाए पर अहिंसा नहीं मरेगी। उनका मानना था कि यदि आपके पास

अहिंसा का तलवार हो तो दुनिया की कोई शक्ति आपको अपनी अधीनता में नहीं ले सकती यह विजेता एवं विजीत दोनों का उदात्तिकरण करता है।

- गांधी जी का मानना था कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से अहिंसा प्रिय है। विपरीत परिस्थितियों के कारण वह हिंसक रूप धारण करता है। अहिंसा समस्त शक्तियों से अधिक शक्तिशाली है इसमें कठोर से कठोर दृश्य को पिघलाने की शक्ति व्याप्त है। वे मानते थे कि बुरे से बुरे व्यक्तियों को अहिंसा से सुधारा जा सकता है। अहिंसा से अभिप्राय अन्याय एवं अत्याचार का शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करना है। उनके अनुसार या केवल व्यक्तिगत सद्गुण ही नहीं बल्कि सामाजिक सद्गुण है। समाज का नियमन लोगों के आपसी व्यवहार में अहिंसा प्रकट होने से होता है।